महिला कृषकों में कृषि कार्य हेतु संचार माध्यमों द्वारा कृषि सूचनाओं की पहुँच व कृषि नवाचारों के प्रयोग का अध्ययन (छत्तीसगढ़ राज्य के धमतरी जिले के संदर्भ में)

1. डॉ. शाहिद अली, एसोसिएट प्रोफेसर, जनसंचार विभाग कुषाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता एवं जनसंचार विष्वविद्यालय, रायपुर
2. मीनाक्षी डड़सेना, शोधार्थी, कुषाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता एवं जनसंचार विष्वविद्यालय, रायपुर

सारांश

हमारे देश में कृषि के विकास में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका है। महिलाएँ भारत के मानव संसाधनों का लगभग आधा (48 प्रतिशत) हिस्सा हैं। महिलाए कृषि उत्पादन में औसतन 60 से 70 फीसदी श्रम का योगदान महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। वे बुवाई से लेकर फसल प्रसंस्करण तक के कृषि उत्पादन में कई प्रकार के कार्य करती हैं। पशुधन, मुर्गी पालन और सभी कृषि उद्यमों की देखरेख भी करती हैं। उनके काम के घंटे प्रतिदिन 8 से 10 घंटे तक होते हैं। वे कृषि के लिए भूमि की तैयारी से फसल की उपज तक की गतिविधियों की एक सरगम में अदृश्य कार्य बलों का प्रतिनिधित्व करती हैं। कृषि प्रौद्योगिकी के नवीनतम विकास के साथ महिलाओं को तकनीकी सम्पन्न करने और उनके तकनीकी कौशल का सम्मान करने के लिए महिलाओं का सामूहिक मीडिया उपयोग व्यवहार मुख्यतः केंद्र में है जो उनके खेती और घर में उत्पादकता में वृद्धि की ओर दर्षित होता है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में कृषक महिलाओं द्वारा कृषि नवाचार के उपयोग व्यवहार का विश्लेषण करने के लिए कृषि प्रधान राज्य छत्तीसगढ़ राज्य के धमतरी जिले के मगरलोड ब्लॉक की 30 महिला कृषकों के न्यादर्ष पर एक अध्ययन किया गया। निष्कर्षों से पता चला कि अधिकांश (70 प्रतिशत) प्राथमिक स्तर पर शिक्षित थी, संचार माध्यमों की उपलब्धता में टेलीविजन माध्यम का प्रतिषत तुलनात्मक रूप से अधिक रहा व कृषि सूचनाओं की प्राप्ति के लिए कृषि विस्तार अधिकारियों पर ज्यादातर महिलाएँ निर्भर पायी गयीं, जिसमें संचार प्रारूप अंर्तव्यैक्तिक के रूप में सामने आया।

Keywords : महिला कृषक, संचार माध्यम, कृषि नवाचार

प्रस्तावना

'यदि कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ है तो महिला कृषक भारतीय कृषि की'। कृषि कार्य जिनमें भूमि तैयार करना, फसलों की बोवाई, रोपाई, कटाई व फसलों के भंडारण तक में महिला कृषकों का योगदान अद्वितीय है। इतिहासकारों का मानना है कि सभ्यता के शुरूआत में महिलाओं ने ही कृषि कार्य का आरंभ किया जिसमें पारिवारिक भरण–पोषण हेतु खाद्यान्न उत्पादन हुआ करते थे। वर्तमान में विकासषील देषों की बात करें तो कृषि व पशुपालन के क्षेत्र में ग्रामीण महिलाएँ ही ज्यादातर संलग्न हैं। वर्तमान आँकड़ों के अनुसार देष की 68 प्रतिषत आबादी कृषि, पशुपालन व कृषि संबधी उद्योगों पर आधारित हैं। 10वीं कृषि जनगणना 2015–16 के अनुसार कृषि में महिलाओं का परिचालन स्वामित्व वर्ष 2010–11 के 13 प्रतिषत से बढ़कर वर्ष 2014–15 में 14 प्रतिषत हो गया है। आँकड़ों पर नजर डाले तो कृषि कार्य में संलग्न कुल मानव संसाधन में 80 प्रतिषत महिलाएँ ही हैं जो कृषि व पशुपालन कार्य का निर्वहन करती हैं। समयानुरूप कृषि का प्रारूप भी बदलता जा रहा है। कृषि परंपरागत से आधुनिक स्वरूप में परिवर्तित होती जा रही है। कृषि स्वरूप में हो रहे परिवर्तन में संचार माध्यमों के योगदान को नकारा नहीं जा सकता। संचार के विभिन्न माध्यम कृषि वैज्ञानिकों द्वारा नित नए हो रहे कृषि नवाचारों व

प्रयोगों को किसानों तक पहुँचाने का अथक प्रयास कर रहे हैं। कृषि के क्षेत्र में कार्यरत महिला कृषक कृषि संचार के भिन्न–भिन्न माध्यमों से प्राप्त कर उन्नत खेती की ओर कदम बढ़ा रही हैं। हर क्षेत्र में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी के इस महत्वपूर्ण समय में कृषि क्षेत्र में महिला कृषकों द्वारा नवाचारों के प्रयोग संबधी अध्ययन की प्रासंगिकता सामने आती है।

कृषि में तेजी से विकास हासिल करने के लिए कृषक महिलाओं को नवीनतम कृषि तकनीकों के बारे में पूरी तरह से जानकारी होनी चाहिए। महिलाओं को बाहरी दुनिया के साथ संपर्क और मध्यस्थता करने की उनकी क्षमता को मजबूत करने के लिए उनके संचार माध्यमों तक पहुँच संचार और मध्यस्थता कौशल में सुधार के लिए करती है।

चर

स्वतंत्र चर

- सामाजिक–व्यक्तिगत / सामाजिक–सामाजिक / सामाजिक–आर्थिक

आश्रित चर

- मीडिया उपयोग व्यवहार

उपरोक्त चरों को मानकीकृत स्कोरिंग प्रक्रियाओं का उपयोग करके मापा गया। मीडिया का उपयोग व्यवहार विभिन्न आयामों जैसे कि मीडिया के क्षेत्र, मीडिया का उपयोग, उपयोग की जगह, उद्देश्य, मीडिया वरीयता, प्रोग्रामर वरीयता और अपनाने के संबंध में अध्ययन किया गया था। यहाँ अपनाने का मतलब मीडिया का उपयोग करने के बाद एक कृषि तकनीक का पूर्ण उपयोग था। आँकड़ों को एक संरचित साक्षात्कार अनुसूची का उपयोग करके एकत्र किया गया और आँकड़ों का विश्लेषण प्रतिशत सांख्यिकीय तकनीक का उपयोग करके किया गया।

संबंधित शोध साहित्य का अध्ययन

- **लक्ष्मी स्वाति पी. एस., के. चंद्रकंदन एवं बालासुब्रमणि (2015)** द्वारा कृषक महिलाओं के द्वारा संचार माध्यम के प्रयोग पर एक शोध अध्ययन किया गया। अपने शोध में उन्होनें कृषक महिलाओं के द्वारा कृषि कार्य में संचार माध्यमों के प्रयोग जानने के लिये 30 कृषक महिलाओं के न्यादर्ष पर अध्ययन किया। निष्कर्षों द्वारा ज्ञात हुआ कि अधिकांष महिलाओं (60 प्रतिषत) के पास प्राथमिक स्तर पर षिक्षित थी, 90 प्रतिषत महिलाओं के पास रेडियो था और उनमें से अधिकांष किसान चर्चा समूहों की सदस्य थीं, साथ ही रेडियो पर कृषि कार्यक्रमों की नियमित श्रोता थीं। वे युवा क्लब, महिला संघ और मीडिया फोरम की भी सदस्य थीं। इन महिलाओं ने नियमित रूप कृषि और संबद्व क्षेत्रों में प्रषिक्षण कार्यक्रमों में भाग लिया। केवल 10 प्रतिषत महिलाएं ही फार्म पत्रिकाओं की सदस्य थीं।
- **ऐलिजाबेथ एल, इस्साया सोकोईन एवं अंगुगा राबर्ट (2018)** द्वारा तंजानिया में महिला कृषकों के लिये कृषि संबंधी जानकारी के स्त्रोत पर एक शोध अध्ययन किया गया। महिला कृषक तंजानिया में कृषि उत्पादकों के विषाल बहुमत का गठन करते हैं। यह अध्ययन, जो क्रमषः किलिमंजारो और मोरोगोरो क्षेत्रों के हाई और किलोसा जिलों में 300 महिला कृषकों के मध्य किया गया था, का मुख्य उद्देष्य उनके कृषि सूचना के स्त्रोतों की पहचान करना था। अध्ययन के परिणामों में पाया गया कि महिला कृषकों के लिये रेडियो और कृषि विस्तार कार्यक्रम ही कृषि जानकारी के प्रथम स्त्रोत थे।

अध्ययन का उददेष्य

- संचार माध्यमों द्वारा महिला कृषकों तक कृषि सूचनाओं की पहुँच का अध्ययन।
- संचार माध्यमों द्वारा प्रसारित कृषि नवाचारों का महिला कृषकों द्वारा अपने कृषि कार्य में उपयोग का अध्ययन।

शोध प्रष्न

- महिला कृषकों द्वारा कृषि संबधी जानकारी हेतु संचार माध्यमों का प्रयोग किया जाता है?
- महिला कृषकों द्वारा कृषि नवाचारों का प्रयोग किया जाता है?

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन धमतरी जिले के मगरलोड ब्लॉक (जनसंख्या1,21,430) में संचालित किया गया। इस तथ्य के आधार पर कि चयनित ब्लॉक के गांव की बड़ी संख्या में कृषक महिलाएँ खुद को बड़े पैमाने पर मीडिया के उपयोग में शामिल करती थीं। अध्ययन हेतु धमतरी जिले के मगरलोड ब्लॉक की कुल 30 कृषक महिलाओं के अध्ययन के लिए न्यादर्ष समूह का गठन किया। आँकड़ों के संकलन हेतु अनुसूची का प्रयोग किया गया।

आँकडों का विष्लेषण एवं व्याख्या

1. **व्यवसाय**

सारणी कमांक 1

क.	व्यवाय का प्रकार	संख्या	प्रतिशत
1	घरेलु कृषक	22	73
2	लीज (रेघहा)	0	0
3	अधिया	0	0
4	व्यवसायिक कृषक	8	26

आरेख कमांक 1

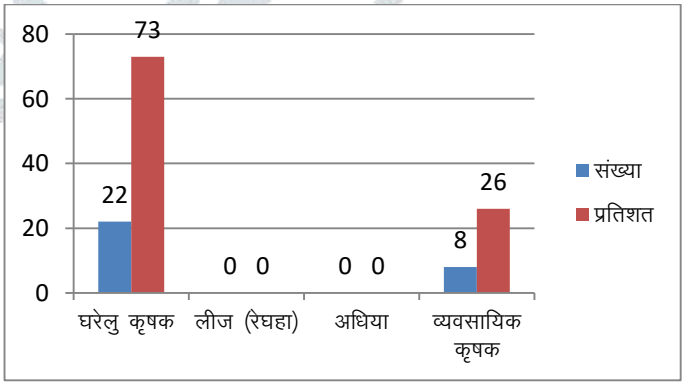

व्याख्या

चयनित उत्तरदाताओं से प्रष्न आप किस प्रकार की खेती करते हैं के जवाब में 30 में से 22 उत्तरदाताओं ने बताया की वे घरेलू कृषक हैं वहीं 8 महिला कृषकों ने कहा कि वे व्यवसायिक खेती करते हैं। कृषि उत्पादन का विक्रय बाजारों में भी करते हैं।

2. आय

सारणी क्रमांक 2

क्रं.	विकल्प	संख्या	प्रतिशत
1	0–5 हजार	0	0
2	10–15 हजार	22	73.33
3	15–25 हजार	8	26.67
4	25 हजार से उपर	0	0

आरेख क्रमांक 2

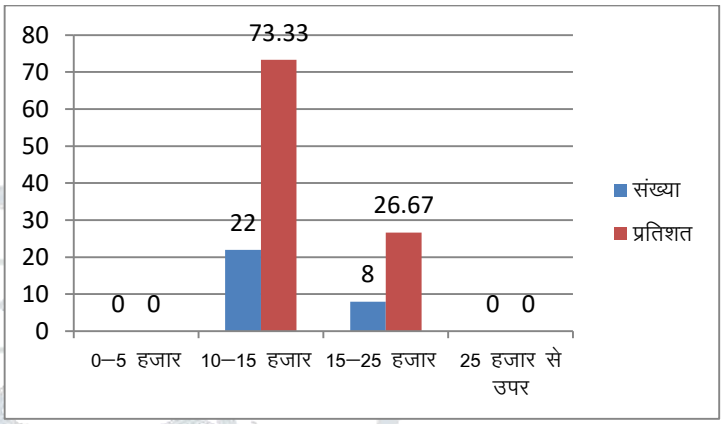

व्याख्या –

चयनित उत्तरदाओं में से 22 महिला कृषकों की कृषि से प्राप्त आय 10–15 हजार व 8 महिला कृषकों की आय 15–25 हजार है।

3. सामाजिक प्रतिभागिता

सारणी क्रमांक 3

क्रं.	प्रतिभागिता का प्रकार	संख्या	प्रतिशत
1	ग्राम पंचायत	2	6
2	को–ऑपरेटिव	0	0
3	सोसायटी	0	0
4	संगठन / समूह	11	35

आरेख क्रमांक 3

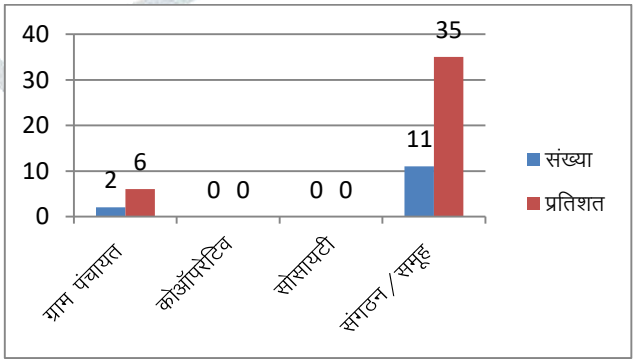

व्याख्या

महिला कृषकों में से 2 महिलाएँ ही पंचायत की सदस्य हैं व 30 में से 11 महिलाएँ गांवों में संचालित स्व–सहायता समूह की सदस्य हैं।

4. सूचना प्राप्ति के लिए कौन सा माध्यम उपयोग करते हैं?

सारणी क्रमांक 4

क्रं.	सूचना प्राप्ति का साधन	संख्या	प्रतिशत
1	टेलीविज़न	21	70
2	रेडियो	2	10
3	समाचार पत्र	0	0
4	अन्य	7	23.33

आरेख क्रमांक 4

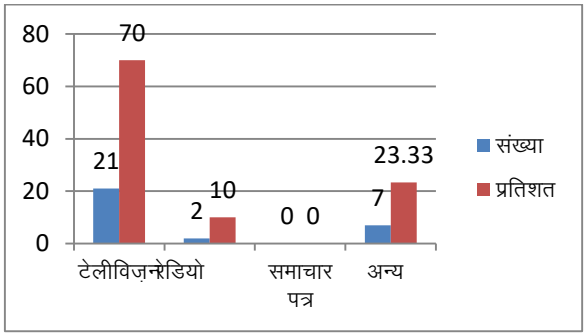

व्याख्या

चयनित महिला कृषकों में से 21 महिलाएँ टेलीविजन के माध्यम से सूचना प्राप्ति करती हैं वहीं 2 महिलाएँ रेडियो के माध्यम से सूचनाएँ प्राप्त करती हैं। समाचार पत्र का प्रयोंग चयनित महिलाओं द्वारा नहीं किया जा रहा है व 7 महिलाएँ सूचना हेतू संचार के मुख्य माध्यम का प्रयोग न कर अन्य माध्यम का प्रयोग करती हैं।

5. कृषि संबधी जानकारी के लिए कौन सा माध्यम उपयोग करते हैं?

सारणी क्रमांक 5

क्रं.	सूचना का माध्यम	संख्या	प्रतिशत
1	टेलीविज़न	12	40
2	रेडियो	2	6.67
3	समाचार पत्र	0	0
4	अन्य	16	53.3

आरेख क्रमांक 5

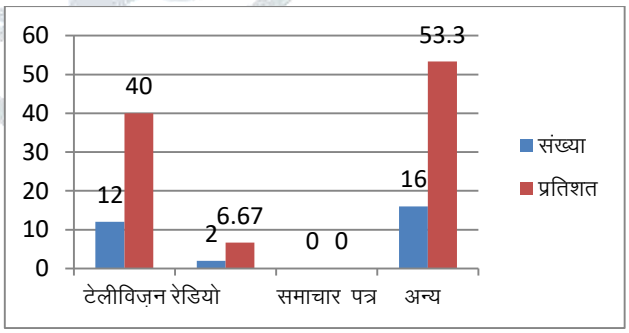

व्याख्या

कृषि सूचनाओं की प्राप्ति का माध्यम कौन सा है, के उत्तर स्वरूप 12 महिला कृषकों ने टेलीविज़न कहा, 2 महिला कृषकों ने रेडियो माध्यम कहा वहीं 16 महिला कृषकों का उत्तर अन्य (कृषि विस्तार अधिकारी) रहा।

6. संचार माध्यम से प्राप्त कृषि जानकारी, नवाचारो का प्रयोग अपने कृषि कार्य में करते हैं

सारणी क्रमांक 6

क्रं.	विकल्प	संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	13	43.33
2	नहीं	0	0
3	कभी कभी	17	56.67
`4	कह नहीं सकतें	0	0

आरेख क्रमांक 6

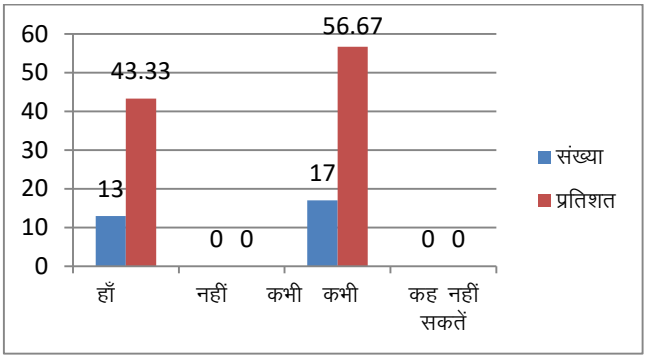

व्याख्या

चयनित उत्तरदाताओं में से 13 उत्तरदाताओं ने कहा कि वे संचार माध्यमों से प्राप्त कृषि जानकारी का प्रयोग अपने कृषि कार्य में करते हैं व 17 महिला कृषकों ने कहा कि संचार माध्यमों से प्राप्त कृषि जानकारी व नवाचारों का प्रयोग अपने कृषि कार्य में कभी–कभी ही करते हैं।

7. कृषि जानकारियों को क्या किसी के साथ साझा करते हैं?

सारणी क्रमांक 7

क्रं.	विकल्प	संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	23	76.67
2	नहीं	0	0
3	कभी कभी	7	23.33
4	कह नहीं सकतें	0	0

आरेख क्रमांक 7

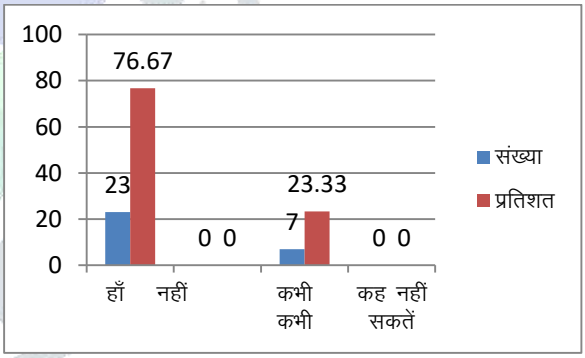

व्याख्या

संचार माध्यमों से प्राप्त कृषि जानकारीयों को क्या आप अन्य महिला कृषकों से साझा करतें हैं के उत्तर में 23 महिलाओं ने हाँ कहा वहीं 7 महिला कृषकों ने कहा कि वे कभी–कभी ही कृषि जानकारियों को साझा करती हैं।

चर्चा एवं सुझाव

अध्ययन के निष्कर्षों से संकेत मिलता है कि कृषि संचार माध्यमों की बात करें तो टेलीविजन की पहुँच चयनित सभी महिलाओं तक है। रेडियो लोकप्रिय माध्यम होने के बाद भी चयनित क्षेत्र में उपलब्धता कम नजर आई। सरकार द्वारा नियुक्त कृषि विस्तार अधिकारी जिनका कार्य कृषि सूचनाओं व नवाचारों का कृषकों तक विस्तार करना है, इनके द्वारा बतायी गई कृषि सूचनाओं का प्रयोग महिला कृषक अपने कृषि कार्य में सर्वाधिक करती हुई पायी गयीं। यद्यपि अध्ययन क्षेत्र में अधिकांष कृषक महिलाओं के पास प्राथमिक स्तर की शिक्षा थी, लेकिन कृषि प्रकाशनों का उपयोग चयनित महिला कृषकों द्वारा नही

किया गया था। कृषि विश्वविद्यालय और कृषि विज्ञान केंद्र, कृषक महिलाओं को मुफ्त में से ये प्रकाशन उपलब्ध कराकर संचार माध्यमों के उपयोग को प्रभावी ढंग से बढ़ावा दिया जा सकता है।

महिला कृषकों को लंबे समय से कृषि में अदृश्य श्रमिकों के रूप में रखा गया है जबकि कृषि विकास के लिए उनका योगदान हमेषा रहा है।इसलिए रेडियो, टेलीविज़न और प्रिंट मीडिया मंचों के प्रभावी उपयोग को संगठित करना और बढ़ावा देना कृषि विकास के लिए कृषक महिलाओं को प्रबुद्ध करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

निष्कर्ष व उपसंहार

प्रस्तुत शोध कार्य धमतरी जिले की महिला कृषकों में कृषि कार्य हेतु संचार माध्यमों की पहुँच व उनके द्वारा कृषि नवाचारों के प्रयोग पर आधारित एक अध्ययन था जिसके अन्तर्गत शोधकर्ता ने चयनित क्षेत्र में चयनित न्यादर्ष संख्या (30 महिला कृषक) से आँकड़े संकलित करके उनका प्रतिषतीय विष्लेषण किया व व्याख्या निरूपित की। प्राप्त निष्कर्षों से स्पष्ट हो रहा है कि शोध कार्य हेतु चयनित महिला कृषकों द्वारा समाचार पत्र का प्रयोग न्यूनतम पाया गया जिसका मुख्य कारण महिलाओं का बुनियादी रूप से षिक्षित ना होना व साक्षरता का अभाव देखा गया। महिला कृषकों द्वारा कुछ सीमा तक रेडियो व टेलीविज़न के प्रयोग की पुष्टि की गई परन्तु संचार के ये साधन भी ज्यादा प्रभावषील नहीं पाये गये कारण महिलाओं के कृषि कार्यों के अलावा दैनिक कार्यों में व्यस्त होना पाया गया। सबसे अधिक लाभ कृषि विस्तार अधिकारियों द्वारा कृषक महिलाओं को प्राप्त होने की पुष्टि की गई क्योंकि धमतरी जिले का मगरलोड ब्लॉक ना केवल एक विकसित कृषि बेल्ट के रूप में जाना जाता है अपितु इस क्षेत्र के कृषि विस्तार अधिकारियों की जागरूकता व उनके द्वारा कृषि संबंधी सूचनाओं का प्रचार–प्रसार प्रषंसनीय है, जिसका प्रत्यक्ष लाभ प्रस्तुत शोध कार्य के दौरान महिला कृषकों को प्राप्त होते हुये पाया गया

संदर्भ ग्रन्थ सूची

- **बायर रेड्डी, एच. एन. (1992)**. आंध्र प्रदेश में कृषि उत्पादन में महिला कृषकों की भागीदारी और कृषि के आधुनिकीकरण के प्रभाव का विश्लेषण. भारत APAU, हैदराबाद में ICAE, IRRI और UNDP द्वारा प्रायोजित संयुक्त परियोजना का एक हिस्सा।
- **शंकरन और रानी पेरूमल (1993)** तमिलनाडु कृषि और कृषि में महिला कृषक–विकासात्मक मुद्दे। राष्टीय संगोष्ठी की कार्यवाही, 28–30 दिसंबर, 1993. राष्टीय कृषि अनुसंधान प्रबंधन अकादमी, हैदराबाद।
- **संतरा, एस. और कुंडू रूबी (2001)** सतत कृषि विकास के लिए महिला सशक्तिकरण. एक्सटंशन रिसर्च रिव्यू मैनेज करें 2:131–135.
- **साथीदास, आर. एस. आशाथाला, सिंधु, सदानंदन, जोसेफ, रे. वाई (2003)** केरल में फसल के बाद के समुदी मत्स्य क्षेत्र में महिला कार्यकर्ताः सामाजिक–आर्थिक प्रोफाइल, मत्स्य पालन किमीस 23(2):मार्च।